जागृति भक्ति: तुलसीदास का जीवन और कार्य

मंजू लता, शोधार्थी (हिंदी), द ग्लोकल यूनिवर्सिटी सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

सारांश

भारतीय साहित्य एवं भक्ति आंदोलन के इतिहास में गोस्वामी तुलसीदास का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे हिंदी साहित्य के भक्तिकाल के महान कवि, संत एवं समाज सुधारक माने जाते हैं। उनका जीवन और साहित्य भारतीय संस्कृति, धार्मिक चेतना, नैतिक मूल्यों तथा सामाजिक जागृति का महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है। तुलसीदास ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भक्ति को केवल ईश्वर की आराधना तक सीमित न रखकर उसे मानव जीवन के आदर्शों, कर्तव्यनिष्ठा, प्रेम, करुणा, त्याग और मर्यादा से जोड़ा। उनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना रामचरितमानस ने जनसामान्य में धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना का प्रसार किया। इसके अतिरिक्त विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली और दोहावली जैसी रचनाओं में भी उनकी आध्यात्मिक दृष्टि, सामाजिक विचारधारा और लोकमंगल की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। तुलसीदास की भक्ति का प्रमुख आधार राम के प्रति अनन्य प्रेम, समर्पण और विश्वास है। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से तत्कालीन समाज में व्याप्त नैतिक एवं सामाजिक समस्याओं के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य तुलसीदास के जीवन, व्यक्तित्व, कृतित्व और उनकी भक्ति भावना का अध्ययन करना है। साथ ही, उनके साहित्य में निहित सामाजिक जागृति, मानवीय मूल्यों और सांस्कृतिक चेतना का विश्लेषण करना भी इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि तुलसीदास का साहित्य केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज को नैतिक दिशा प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण साहित्यिक एवं सांस्कृतिक स्रोत भी है। उनकी रचनाएँ आज भी मानव जीवन में आदर्श, सदाचार, भक्ति और सामाजिक समरसता की प्रेरणा प्रदान करती हैं।